रविवासरीय

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

मददगार सुषमा

सुषमा स्वराज ने मलेशिया में फंसे एक भारतीय परिवार को यात्रा दस्तावेज उपलब्ध कराने के लिए अवकाश के दिन दूतावास खोलने को कहा। पेज 17

लखनऊ की स्ट्रीट लाइटें खराब होने पर मुख्यमंत्री नाराज पेज 07 | इंग्लैंड ने अण्डर-17 वर्ल्डकप फुटबाल का खिताब जीता पेज 18

रविवार, 29 अक्तूबर 2017, लखनऊ, पांच प्रदेश, 20 संस्करण, नगर संस्करण www.livehindustan.com वर्ष 8, अंक 42, 24 पेज+4 पेज फुरसत+4 पेज सच इंजन, मूल्य ₹ 4.00, कार्तिक, शुक्ल पक्ष, नवमी, विक्रम सम्वत् 2074

उचित ढांचे के अभाव में स्क्रैप डीलर 90 फीसदी इलेक्ट्रॉनिक कूड़ा फेंक देते हैं

इलेक्ट्रॉनिक कचरे की रिसाइकिलिंग काफी धीमी

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

देश में पांच प्रतिशत से भी कम इलेक्ट्रॉनिक कचरा रिसाइकिल के जरिए दोबारा इस्तेमाल होता है। उचित ढांचे, कानून और रूपरेखा के अभाव में ई-वेस्ट को रिसाइकिल नहीं किया जाता। यह बात स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंस के डायरेक्टर जनरल प्रो. भारत राज सिंह ने कही। वे शनिवार को रिवर बैंक कॉलोनी स्थित द इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स द्वारा दो दिवसीय ऑल इंडिया सेमिनार ऑन इलेक्ट्रॉनिक वेस्ट कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि देश में 90 फीसदी इलेक्ट्रॉनिक कूड़े का प्रबंधन असंगठित क्षेत्र द्वारा किया जाता है। स्क्रैप डीलर इन उपकरणों को खोलकर रिसाइकिल करने के बजाए फेंक देते हैं। इनमें से ज्यादातर उपकरणों को रिसाइकिल कर पुनः इस्तेमाल किया जा सकता है।

हर वर्ष करीब 50,000 टन ई-वेस्ट पैदा हो रहा: ईकोमेन लैबोरेट्रिज प्रा. लि. के चेयरमेन आरएन भार्गव ने कहा कि ई-वेस्ट के कारण भूमिगत जल ही प्रदूषित नहीं हुआ है, बल्कि मिट्टी की भी उर्वरक क्षमता पूरी तरह खत्म हो चुकी है। उन्होंने कहा कि देश में प्रतिवर्ष करीब 50,000 टन ई-वेस्ट पैदा हो रहा। इसमें करीब 25 फीसद की दर से वृद्धि हो रही है। एक मोबाइल फोन की बैटरी छह लाख लीटर पानी दूषित कर सकती है।

ई-वेस्ट से जन्मी गंभीर बीमारियां

ई-रिक्शा में जिस मात्रा में बैटरी की खपत होती है इससे आने वाले दिनों में ई-वेस्ट की समस्या बढ़ जाएगी। इससे वातावरण विषैला हो रहा है। इसके अलावा कंप्यूटर में घातक शीशा, फास्फोरस, कैडमियम व मरकरी जैसे तत्व होते हैं। जो जलाए जाने पर सीधे वातावरण में घुलते हैं। कंप्यूटरों के स्क्रीन के रूप में इस्तेमाल होने वाली कैथोड-रे जिस मात्र में शीशा (लेड) पर्यावरण में छोड़ती है वह भी काफी नुकसानदेह होता है। ये खतरनाक रसायन कैंसर आदि कई गंभीर बीमारियां पैदा करते हैं। कार्यक्रम में देश भर से वैज्ञानिक एवं इंजीनियरों ने हिस्सा लिया।